INDIAN SOCIAL AND RESEARCH FOUNDATION, AKOLA'S
KALA MAHAVIDYALAYA MALKAPUR, AKOLA
(Accredited by NAAC with "B" Grade)
MIDC Phase 2, Near Railway Gate, Near V.H.B. Colony, Malkapur, Tq Dist. Akola
Affiliated to S.G.B. Amravati University, Amravati

Email : arts.60@rediffmail.com | Web : artscollegeakola.in
COLLEGE CODE : 231 | Mobile : 99236 36564 / 83808 54428

Hon. Dr. D. H. PUNDKAR, President | Dr. G. S. Pande, Principal

Letter No. :- A.C.M./ 9 / 2024 Date : 12/12/2024

NAAC DVV CLARIFICATIONS: CRIT III

3.3: Research Publications and Awards

3.3.2: Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years

3.3.2.1: Total number of books and chapters in edited volumes/books published and papers in national/ international conference proceedings year wise during last five years

HEI Input :

2023-24	2022-23	2021-22	2020-21	2019-20
19	11	12	06	11

DVV suggested Input :

2023-24	2022-23	2021-22	2020-21	2019-20
03	03	00	00	00

Change Input (Optional) :

2023-24	2022-23	2021-22	2020-21	2019-20
03	03	00	00	00

DVV Clarifications:	HEI Response:
Values have been updated as the ISBN no. not found and book without ISBN no. has not been considered; HEI to provide Cover page, content page, and the first page of the publications/chapter claimed highlighting the name of HEI, author name, year of publication /addition of the following books: 1) ND publication Nai Delhi 2)ND Publication Nai Delhi 3)INSC international publishers	Cover page, content page, and the first page of the publications/chapter is provided and the name of HEI, author name, year of publication /addition of the following books: 1) ND Publication Nai Delhi 2)ND Publication Nai Delhi 3)INSC international publishers is highlighted.

G.S. Pande
Principal,
Kala Mahavidyalaya,
Malkapur, Akola (MH)

INDIAN SOCIAL AND RESEARCH FOUNDATION, AKOLA'S
KALA MAHAVIDYALAYA MALKAPUR, AKOLA
(Accredited by NAAC with "B" Grade)
MIDC Phase 2, Near Railway Gate, Near V.H.B. Colony, Malkapur, Tq Dist. Akola
Affiliated to S.G.B. Amravati University, Amravati

Email : arts.60@rediffmail.com
COLLEGE CODE : 231

Web : artscollegeakola.in
Mobile : 99236 36564 / 83808 54428

Hon. Dr. D. H. PUNDKAR
President

Dr. G. S. Pande
Principal

Letter No. :- A.C.M./ Q / 2024

Date : 12/12/2024

List of Documents Uploaded:

Sr. No.	Particulars of uploaded documents	Page No
01	Certificate from the Head of the Institution.	02
02	Cover page, content page, and the first page of the publications/chapter is provided and the name of HEI, author name, year of publication /addition of the following books is highlighted. 1) ND Publication Nai Delhi	03
	2)ND Publication Nai Delhi	07
	3)INSC international publishers is highlighted.	11

KALA MAHAVIDYALAYA Affiliated to SGBAU Amravati Coll. Code 231 Malkapur, Akola (MH)

G.S. Pande
Principal;
Kala Mahavidyalaya
Malkapur, Akola (MH)

Cover page, content page, and the first page of the publications/chapter is provided and the name of HEI, author name, year of publication /addition of the following books

1) ND Publications New Delhi

Cover page

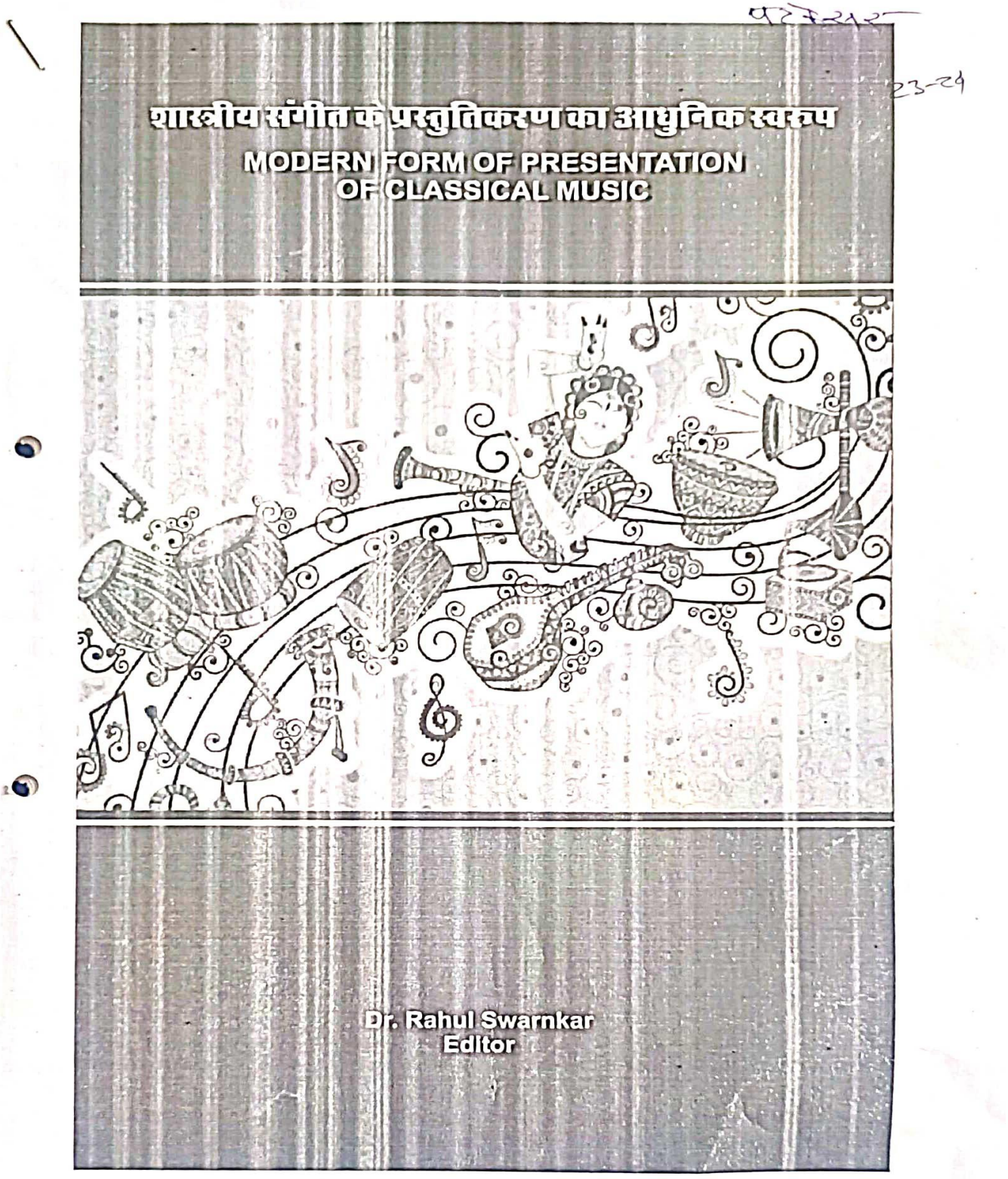

CONTENT Page

	योगदान (राग की बंदिशो के परिप्रेक्ष्य मे)	श्रीवास्तव	
	संगीत का अन्य विशयों से संबंध	प्रा. वंदना मधुकरराव दे ामुख	148-150
	संगीत एवं द''न भास्त्र (पुरुशार्थ चतुश्टय) : इतिहास के झरोखे से	डा0 अलका सिंह	151-155
	तबला वाद्य एक समीक्षात्मक अध्ययन	श्याम सुन्दर नागर	156-159
	संगीत में प्रस्तुतिकरण के बदलते आयाम	डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके	160-164
	संगीत की गायन विधा राग के प्रस्तुतीकरण में सौन्दर्यात्मक प्रभावो का रहस्य	पूर्ति जैन / संतोश कुमार पाठक	165-169
	प्रस्तुतिकरण पर वैज्ञानिक उपकरणों का प्रभाव	Ritu Bhardwaj	170-172
	कथक नृत्य के प्रस्तुतीकरण में तकनीक एवं नवाचार का प्रयोग	डॉ. अपर्णा चाचोंदिया	173-176
	ललितकलाओं का अंतःसंबंध	डॉ. अर्चना द्विवेदी	177-183
	शास्त्रीय संगीत में प्रस्तुतिकरण का आधुनिक स्वरुप	अभिषेक कुमार मिश्रा	184-185
	तबला में गायन,वादन एवं नृत्य संगत	डॉ. विभूति मलिक	186-189
	सितार वादन शैलीपर विभिन्न गायन शैलियों का प्रभाव	डॉ0 सुमित्रा देवी चौहान	190-192
	आधुनिक समय में पं. सतीश चन्द्र श्रीवास्तव का सितार वादन के क्षेत्र में योगदान	शाईना, डॉ. अमिता शर्मा	193-195
	ख्याल की बंदिशों में प्रयुक्त कत्थक नृत्य शैली के भावप्रदर्शन तत्व :- अष्टनायिका	श्री राजेश नरसिंग घोडे	196-199
	हारमोनियम एकल वादन के बदलते प्रवाह एवं आधुनिक स्वरूप	डा. प्रवीण कासलीकर	200-202
	पटियाला और भेंडीबजार घरानों की निर्मिती एवं स्वरूप	डॉ.दिपाली चंद्रकांत पांडे	203-207
	सांगीतिक प्रस्तुतिकरण मे साहित्य एवं भाषा का	प्रो. किन्शुक श्रीवास्तव	208-211

संगीत में प्रस्तुतिकरण के बदलते आयाम

डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके
सहा. प्राध्यापक
संगीत विभाग
कला महाविद्यालय मलकापुर,अकोला, महाराष्ट्र

प्रस्तावना –:

प्रस्तुत शोध पत्र यहँ "संगीत में प्रस्तुतिकरण के बदलते आयाम" इस विषय पर आधारित है। संगीत यह लालित्यपूर्ण, प्रायोगिक और प्रस्तुतिकरण की कला है। शास्त्र की तुलना में संगीत का क्रियात्मक पक्ष बहुत महत्वपूर्ण होता है। संगीत विषय पर डेढ दो घंटे का व्याख्यान सुनने के बजाय पाँच मिनट का गाना सुनकर उपस्थित जनमानस आनंद से अभिभूत हो जाता है। इससे स्पष्ट होता है की संगीत मे क्रियात्मक पक्ष कितना प्रभावपूर्ण है। संगीत के क्रियात्मक पक्ष में घराणेदार गायकी के अंतर्गत पुराने और वर्तमान गायकों की गायन शैली, उनका आवाज लगाव, उनकी प्रस्तुतिकरण शैली और प्रस्तुतिकरण में क्रमिक बदलाव पर प्रस्तुत शोध पत्र आधारित है। एक ही कलाकार द्वारा एक ही राग का अलग–अलग माध्यमों में प्रस्तुतिकरण किस तरह से बदलता है? संगीत सम्मेलनों में, कैसेट्स, CD में, आकाशवाणी–दूरदर्शन में प्रस्तुति करते समय कैसी परिस्थिति होती है? इन सभी में वह क्या बदलाव करता है? केवल संगीतही एक ऐसी कला है जिसमें कलाकार को अपनी कला की अभिव्यक्ति रसिकों के सम्मुखही करनी पड़ती है। संगीत कला की अभिव्यक्ति मे कलाकार और रसिक दोनों की उपस्थिति अनिवार्य है। अर्थात संगीत कला के प्रस्तुतीकरण को अत्यंत महत्व प्राप्त होता है। बिना प्रस्तुतीकरण के न रसिकों को कलाकार की कला का परिचय होगा और न कलाकार को अपनी कला का रसिकोंपर क्या प्रभाव पड़ता है इसका पता लगेगा। प्रस्तुतीकरण का विश्लेषणात्मक ढंग से सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है।

मुख्य शब्द –: प्रस्तुतिकरण का बदलता स्वरुप।

संशोधन की आवश्यकता और उपयोगिता –:

प्रस्तुत शोध निबंध की आवश्यकता सांगीतिक रचना का प्रस्तुतिकर और प्रस्तुतिकरण में कालानारूप हुए बदलाव तथा पूर्व इतिहास इन सभी विषयो में पूर्व काल से आधुनिक काल तक किस प्रकार प्रस्तुतिकरण में परिवर्तन होते गये, संगीत एक क्रियात्मक विधा है, अर्थात् संगीत–विद्या निरन्तर करने की विद्या है। जो इसका जितना अभ्यास करेगा, वह इसमें उतना ही पारंगत बन सकेगा। अभ्यास ही संगीत–विद्या का आधार स्तम्भ है, इसी के आधार पर एक अच्छा संगीतज्ञ या कलाकार शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त रागों का समय–चक्र पर भी अध्ययन होना जरूरी है। इसका क्रमिक बदलाव और विकास किस प्रकार हुआ। संगीत का प्रस्तुतिकरण किस प्रकार बदलते गया और आज के आधुनिक काल में इसने कौनसा रूप धारण किया हैं, इस विषय पर क्रमिक विकास और स्वरूप इस दृष्टिकोण से संशोधन करने की आवश्यकता संशोधनकर्ता को महसूस होती है।

संशोधन पद्धती–:

डॉ. राहुल स्वर्णकार ने तबले की प्रारम्भिक शिक्षा श्री विभूति मलिक जी से तथा उच्च शिक्षा पं. राम स्वरूप रतोनिया जी के सानिध्य में ली और भारत सरकार की संस्कृति मंत्रालय की छात्रवृत्ति भी प्राप्त की । तबला विषय में स्नातकोत्तर की उपाधी खैरागढ़ विश्विद्यालय छ. ग. से सर्वोच्च अंकों के साथ उस्ताद अहमद जान थिरकवा स्वर्ण पदक एवं सेठ बालकृष्ण रजत पदक प्राप्त कर पूर्ण की । संगीत कोविद संगीत प्रवीण, यू. जी.सी. नेट और बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि भी प्राप्त की है। वर्तमान में आप डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर म.प्र.के संगीत विभाग में तबला विषय के सहायक प्राध्यापक हैं । इसके पहले माधव संगीत महाविद्यालय इन्दौर, उज्जैन तथा नूतन कन्या महाविद्यालय भोपाल म.प्र. में अपनी सेवाएं दे चुके हैं । केंद्रीय विद्यालय चेन्नई प्रान्त, में संगीत शिक्षक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। आप कई राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित भी कर चुके हैं । संगीत विषयक 20 से अधिक राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सेमीनार में शोधपत्र प्रस्तुत कर चुके हैं । कई पुस्तकों में लेख और संगीत विषय पर पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। अकादमिक गतिविधियों के साथ मंचीय प्रस्तुति में भी समान रूप से सक्रिय हैं । आप अकाशवाणी एवं दूरदर्शन के नियमित एवं 'ए' श्रेणी के कलाकार हैं। देश के कई मंचों के अलावा वर्ष 2018 में फ्रांस के बेल्फोर्ट में अंतर्राष्ट्रीय फीमो फेस्टिवल में भारत की तरफ से सहभागिता की। वर्ष 2019 में यू. जी. सी. के लिए तालों का सौंदर्य शास्त्र ऑनलाइन पाठ्यक्रम निर्माण किया। वर्तमान में कई विद्यार्थी आपके सानिध्य में तबला वादन की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसके अलावा आप कई सम्मान भी प्राप्त कर चुके हैं जिनमें ताल मणी सम्मान, कला निधि सम्मान, संगीत रत्न सम्मान, ताल साधक सम्मान आदि प्रमुख हैं। कई संस्थानों के परीक्षक के रूप में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

ND Publication
Badhapur East, New Delhi
www.ndpublication.com
Email: ndpublication@gmail.com

ISBN :978-81-966424-4-0

978-81-966424-4-0

2) Cover page

SECOND PAPER ND PUBLICATION NEW DELHI

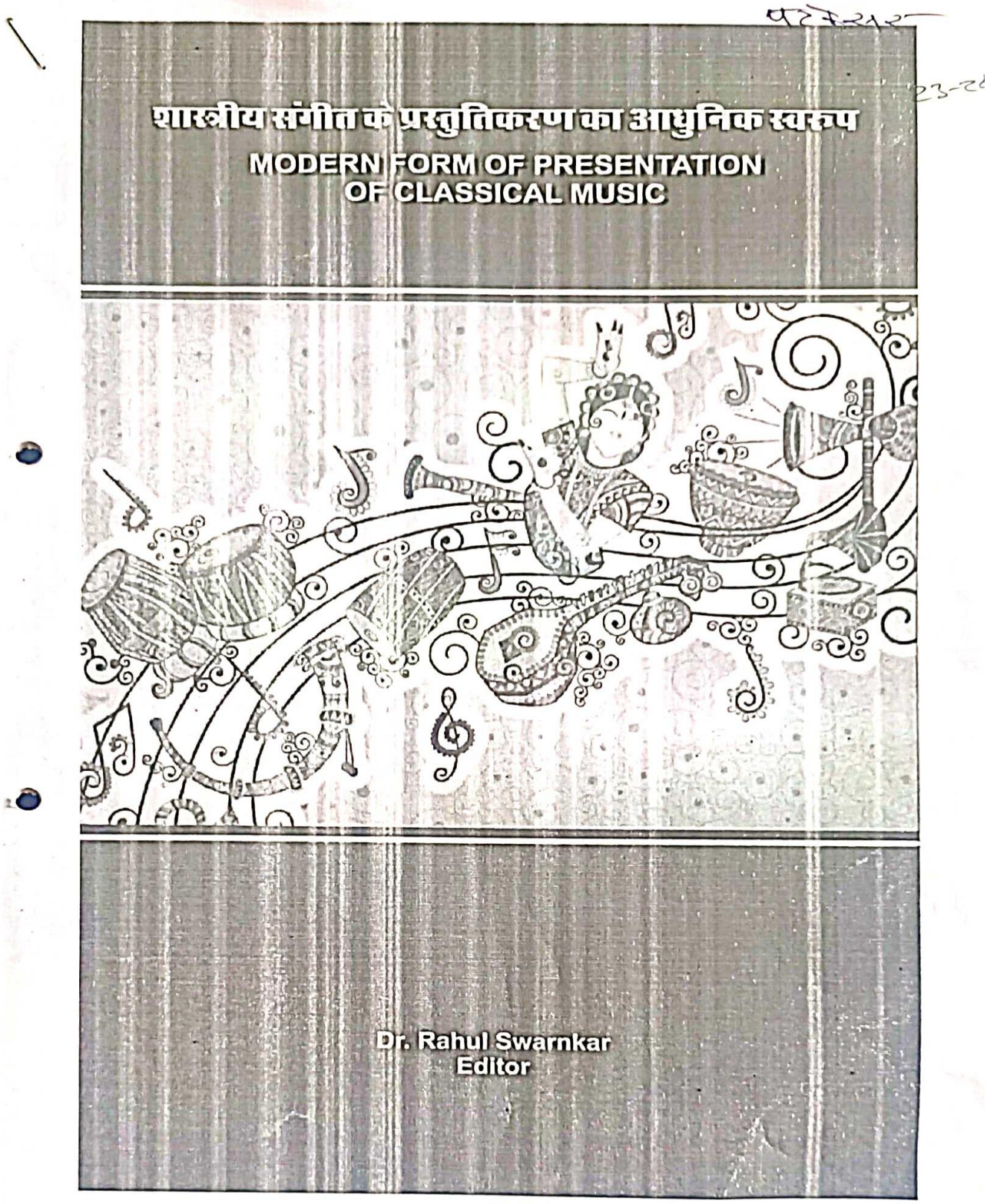

Content page

	योगदान (राग की बंदिशों के परिप्रेक्ष्य में)	श्रीवास्तव	
	संगीत का अन्य विशयों से संबंध	प्रा. वंदना मधुकरराव देशमुख	148-150
	संगीत एवं दर्शन शास्त्र (पुरुषार्थ चतुष्टय) : इतिहास के झरोखे से	डा0 अलका सिंह	151-155
	तबला वाद्य एक समीक्षात्मक अध्ययन	श्याम सुन्दर नागर	156-159
	संगीत में प्रस्तुतिकरण के बदलते आयाम	डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके	160-164
	संगीत की गायन विधा राग के प्रस्तुतीकरण में सौन्दर्यात्मक प्रभावों का रहस्य	पूर्ति जैन / संतोश कुमार पाठक	165-169
	प्रस्तुतिकरण पर वैज्ञानिक उपकरणों का प्रभाव	Ritu Bhardwaj	170-172
	कथक नृत्य के प्रस्तुतीकरण में तकनीक एवं नवाचार का प्रयोग	डॉ. अपर्णा धाचोदिया	173-176
	ललितकलाओं का अंतःसंबंध	डॉ. अर्चना द्विवेदी	177-183
	शास्त्रीय संगीत में प्रस्तुतिकरण का आधुनिक स्वरुप	अभिषेक कुमार मिश्रा	184-185
	तबला में गायन,वादन एवं नृत्य संगत	डॉ. विभूति मलिक	186-189
	सितार वादन शैलीपर विभिन्न गायन शैलियों का प्रभाव	डॉ0 सुमित्रा देवी चौहान	190-192
	आधुनिक समय में पं. सतीश चन्द्र श्रीवास्तव का सितार वादन के क्षेत्र में योगदान	शाईना, डॉ. अमिता शर्मा	193-195
	ख्याल की बंदिशों में प्रयुक्त कत्थक नृत्य शैली के भावप्रदर्शन तत्व :- अष्टनायिका	श्री राजेश नरसिंग बोडे	196-199
	हारमोनियम एकल वादन के बदलते प्रवाह एवं आधुनिक स्वरूप	डा. प्रवीण कासलीकर	200-202
	पटियाला और भेंडीबजार घरानों की निर्मिती एवं स्वरूप	डॉ.दिपाली चंद्रकांत पाडे	203-207
	सांगीतिक प्रस्तुतिकरण मे साहित्य एवं भाषा का	प्रो. किन्शुक श्रीवास्तव	208-211

The first page

संगीत का अन्य विषयों से संबंध

प्रा. वंदना मधुकरराव देशमुख
कला महाविद्यालय, मलकापूर अकोला
संगीत विभाग

प्रस्तावना

प्राचीन काल से अपनी शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया पृथक पद्धती की रही है, और आज तक यह प्रणाली हम सब उपयोग मे ला रहे है। इस पद्धती में हम सब विभिन्न विषय का अध्ययन करते है। जैसे जैसे शिक्षा के स्वरूप का विकास हुआ तो यह विचार सामने आया की सभी विषय मे समान तत्व रहता है। वह तत्व ज्ञान का होता है। किसी भी विषय का ज्ञान करणे हेतू अगर अन्य विषय की सहायता लि जाये, तो अन्य विषय का अध्ययन लेने मे सहायता मिलती है। और इस पद्धती से ज्ञान स्थायी हो सकेगा तथा शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व का अंग बन जाएगी। अगर किसी विषय को विवरणात्मक बताना है, तो उस विषय से संबंधित नये नये उदाहरण के माध्यम से उस विषय की शिक्षा अच्छी तरह समझाई जा सकती है. और यह गुण बालकों के विषय ग्रहण शक्ती के लिये अत्यंत उपयुक्त होगा। आज ऐसे बहुत सारे विषय है, जिनमें संगीत के उदाहरण बताएँ गए है, और कहीं कहीं तो संगीत का सहारा लेकरही सिखाए जाते है। प्राचीन काल मे भी विषयों की ज्ञान लेने की पद्धती थी। जैसे धर्मशास्त्र दर्शनशास्त्र आदी मात्र आधुनिकीकरण मे मनुष्य ने विषय का ज्ञान लिया ऐसे विषयों मे भाषा, साहित्य, समाजविज्ञान, शारीरिक विज्ञान, मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित आदि कीं मात्रा बतायी जा सकती है। यह सभी विषय अपनी जगह महत्वपूर्ण एवं विकसित है। इन्ही विषयों के अंतर्गत प्रस्तुत शोध पत्रिका मे संगीत से संबंध किस प्रकार का है वह दिखाने का प्रयास किया गया है।

विषय अंतर्गत महत्वपूर्ण शब्द सुचि संगीत, विविध विषय एवं परस्पर संबंध

सं ोधन उद्दे ा

संगीत ऐसी कला हैं जिसमें ध्वनी, भावनाओं को प्रद ित करने की भाक्ति, धार्मिकता, संस्कृति कों निर्दे ित करने की भाक्ति गणितीय पध्दतीसे चलने की किया आवाज का गुणधर्म, संगठन आदि विशयों में सहायता करती है। इस उद्दे ा हेतू प्रस्तूत विशय का चयन किया गया है।

संशोधन पद्धती

प्रस्तुत शोध पत्र के लिये सामाजिक, वैज्ञानिक पद्धती का चयन किया है। संशोधन विषय का संबंध अन्य विषयों से संबंधित होते हुए सभी प्रकार के परिस्थितीयों मे आये नए नए बदलाव एवं तकनीकी के प्रभाव से संबंधित है।

विषय चर्चा

प्रस्तुत शोध पत्र मे संगीत का अन्य विषयों से संबंध बताया गया है। संगीत की बात की जाये तो संगीत यह विषय मानव के मन मस्तिश्क एवं भावनाओं से जुडा है। यह मनुष्य के सर्वांगीण विकास हेतू महत्त्वपूर्ण भूमिका भी निभाता है। इसके अलावा इस विषय के माध्यम से अन्य विषयों को समझाना आसान होता है। इतना ही नही नये नये किये गये प्रयोग में संगीत सहाय्यक रूप में सिद्ध हुआ है। इस शोध पत्र में संगीत का साहित्य, सामाजिक विज्ञान, धर्म, भौतिकशास्त्र एवं गणित इन विषयों से संक्षिप्त रूप से संबंध बताया गया है।

डॉ. राहुल स्वर्णकार ने तबले की प्रारम्भिक शिक्षा श्री विभूति मलिक जी से तथा उच्च शिक्षा पं. राम स्वरूप रतोनिया जी के सानिध्य में ली और भारत सरकार की संस्कृति मंत्रालय की छात्रवृत्ति भी प्राप्त की । तबला विषय में स्नातकोत्तर की उपाधी खैरागढ़ विश्विद्यालय छ. ग. से सर्वोच्च अंकों के साथ उस्ताद अहमद जान थिरकवा स्वर्ण पदक एवं सेठ बालकृष्ण रजत पदक प्राप्त कर पूर्ण की । संगीत कोविद संगीत प्रवीण, यू. जी.सी. नेट और बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि भी प्राप्त की है। वर्तमान में आप डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर म.प्र.के संगीत विभाग में तबला विषय के सहायक प्राध्यापक हैं । इसके पहले माधव संगीत महाविद्यालय इन्दौर, उज्जैन तथा नूतन कन्या महाविद्यालय भोपाल म.प्र. में अपनी सेवाएं दे चुके हैं । केंद्रीय विद्यालय चेन्नई प्रान्त, में संगीत शिक्षक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। आप कई राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित भी कर चुके हैं । संगीत विषयक 20 से अधिक राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सेमीनार में शोधपत्र प्रस्तुत कर चुके हैं । कई पुस्तकों में लेख और संगीत विषय पर पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। अकादमिक गतिविधियों के साथ मंचीय प्रस्तुति में भी समान रूप से सक्रिय हैं । आप अकाशवाणी एवं दूरदर्शन के नियमित एवं 'ए' श्रेणी के कलाकार हैं। देश के कई मंचों के अलावा वर्ष 2018 में फ्रांस के बेल्फोर्ट में अंतर्राष्ट्रीय फीमो फेस्टिवल में भारत की तरफ से सहभागिता की। वर्ष 2019 में यू. जी. सी. के लिए तालों का सौंदर्य शास्त्र ऑनलाइन पाठ्यक्रम निर्माण किया। वर्तमान में कई विद्यार्थी आपके सानिध्य में तबला वादन की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसके अलावा आप कई सम्मान भी प्राप्त कर चुके हैं जिनमें ताल मनीषी सम्मान, कला निधि सम्मान, संगीत रत्न सम्मान, ताल साधक सम्मान आदि प्रमुख हैं। कई संस्थानों के परीक्षक के रूप में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

ND Publication
Badhapur East, New Delhi
www.ndpublication.com
Email: ndpublication@gmail.com

ISBN :978-81-966424-4-0

978-81-966424-4-0

3) Cover page

Online Education : Myths and Facts

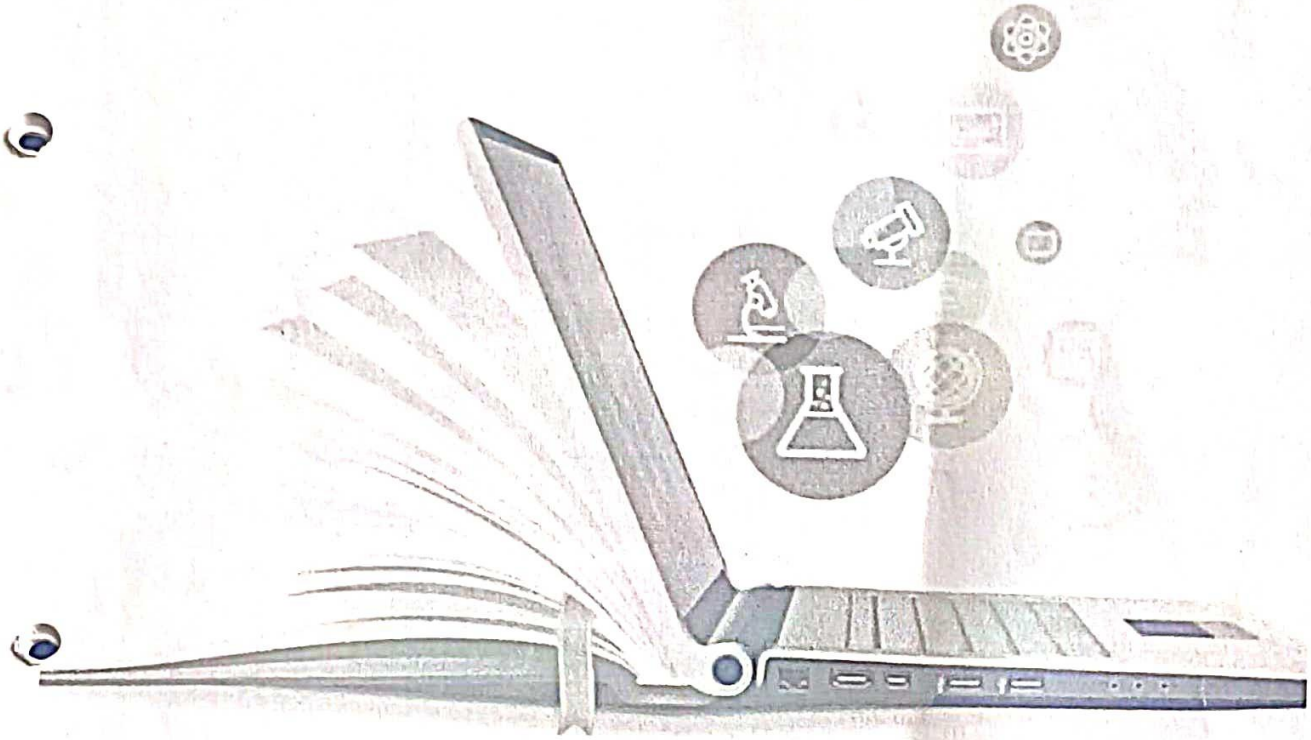

Dr. Hemlata Ganeshrao Dhage
Mr. Sunil Rambhau Thorat
Dr. Sanjay Pandurang Kale

IIP

Online Education: Myths and Facts

First Edition

Editors

Dr. Hemlata Ganeshrao Dhage

Mr. Sunil Rambhau Thorat

Dr. Sanjay Pandurang Kale

INSC International Publishers

Title of the Book: Online Education: Myths and Facts

Edition: First- 2021

Copyright 2021 © Author

Editors

Dr. Hemlata Ganeshrao Dhage

Mr. Sunil Rambhau Thorat

Dr. Sanjay Pandurang Kale

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

Disclaimer

The authors are solely responsible for the contents published in this book. The publishers or editors don't take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

ISBN: 978-93-93364-25-8

MRP: 580/-

PUBLISHER & PRINTER: INSC International Publishers
Pushpagiri Complex, Beside SBI
Housing Board, K.M. Road
Chikkamagaluru, Karnataka
Tel.: +91-8861518868
E-mail: publish@iiponline.org

IMPRINT: I I P

54. ऑनलाईन शिक्षण पध्दतीमध्ये होणारे फायदे आणि तोटे 279
-प्रा. वंदना मधुकरराव देषमुख

55. भारतीय शास्त्रीय संगीताचा प्रवास - गुरुकुल ते ऑनलाईन शिक्षण पद्धती 282
-डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके

56. ऑनलाईन शिक्षण आणि ग्रामीण महाविद्यालयातील विद्यार्थी 292
-प्रा. डॉ. निलम एम. छंगाणी

57. संगीताच्या प्रचार, संवर्धन आणि सादरीकरणावर झालेला तंत्रज्ञानाचा प्रभाव 298
-डॉ. मृणाल प्रभाकरराव कडू

58. ऑनलाईन शिक्षणाचे परिणाम 302
-प्रा. डॉ. गजानन गोपाळराव हेरोळे

59. ऑनलाईन संगीत शिक्षण में पं. भातखंडे के ग्रंथ की उपयोगीता 305
-प्रा. विशाल विजय कोरडे

60. ऑनलाईन शिक्षा जरुरत और चुनौतियॉं 308
-डॉ. शाहेदा मुनाफ

61. ऑनलाईन शिक्षा के फायदे—नुकसान 312
-प्रा. डॉ. फरहाना आजमी मो सादीक पेख

भारतीय शास्त्रीय संगीताचा प्रवास - गुरुकुल ते ऑनलाईन शिक्षण पद्धती

डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके
सहाय्यक प्राध्यापक (संगीत विभाग)
कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला
patake.sunil@gmail.com

ऑनलाईन शिक्षण ही पूर्ण पणे संगणीकृत आणि इलेकट्रॉनिक आधारित किंवा समर्पित शिक्षण-अध्यापन पद्धती आहे. 'शिक्षण' या प्रक्रियेचा अभिप्रेत अर्थ असा की, व्यक्तीमधील नैसर्गिक शक्तीचा व जन्मप्रदत सुप्त गुणांचा अधिकाधिक विकास घडवून आणणे व त्यायोगे व्यक्तीचे मन, शरीर, बुद्धी आवाज सुघटित करणे होय. संगीत शिक्षणाची नेमकी व्याख्या करताना असे म्हणता येईल की, व्यक्तीला निसर्गदत्त प्राप्त झालेल्या स्वर, लय, ताल या प्रतिभासुप्त गुणांचा प्रगत संगीतशास्त्र व कला यांच्या संदर्भात योग्य तो विकास घडवून आणून तो कलात्मक पातळीवर पोहचविणे.

ऑनलाईन शिक्षण पद्धतीला निर्माण झालेली पूरक परिस्थिती म्हणजे वर्तमान काळातील कोविड-१९ महामारी, या महामारीने विश्वाची घडी विस्कडीत केली, या महामारीचा प्रभाव मनुष्याच्या सर्वांगीण जीवनावर झालेला दिसून येतो. भारतीय शास्त्रीय संगीतावर सुद्धा याचा परिणाम झाला आहे. भारतीय शास्त्रीय संगीत ही गुरुमुखी शिक्षा आहे. परंतु परिस्थिती नुसार ऑनलाईन पद्धतीने संगीत शिक्षा देण्याचा पर्याय वापरण्यात येत आहे. ऑनलाईन शिक्षण पद्धतीचे सुद्धा चांगले-वाईट परिणाम दिसून येत आहेत. प्रस्तुत शोध निबंध हा "भारतीय शास्त्रीय संगीतचा प्रवास - गुरुकुल ते ऑनलाईन शिक्षण पद्धती" या विषयावर आधारित असून संगीतातील गायन, वादन आणि नृत्य या कलात्मक विद्यावर झालेला चांगला-वाईट परिणाम व प्रभाव आणि त्यावर मात करून माहितीतंत्रज्ञानाचा सहाय्याने ऑनलाईन शिक्षण पद्धतीचा उपयोग करून सांगीतिक शिक्षण सातत्याने प्रवाहित ठेवण्याकरिता निर्माण करण्यात आलेल्या पर्यायाची माहिती व संगीताचा प्रसार-प्रचार कश्या प्रकारे होऊ शकतो, त्यामध्ये ऑनलाईन तंत्राचा, साहित्याचा व साधनांचा कशा प्रकारे उपयोग होऊ शकतो या संबंधीची संपूर्ण चर्चा "भारतीय शास्त्रीय संगीतचा प्रवास - गुरुकुल ते ऑनलाईन शिक्षण पद्धती" प्रस्तुत शोध निबंधात करण्यात आली आहे.